दिनांक :- 03-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा. फारूक आलम (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

श्रेणी :- एक

पत्र :- एक

अध्याय :- मौर्योत्तर काल स्रोत

इण्डोग्रीक - भारत पर पहला महत्वपूर्ण यवन आक्रमणकारी यूथीडिमस का पुत्र डेमेट्रियस प्रथम अथवा दमित्र था। भारत पर इसने अपने दो सेनापतियो अपोलोडेटस तथा मिणाण्डर की सहायता से आक्रमण किया तथा सिंधु नदी को पार करते हुए चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

डेमेट्रियस ने अपनी राजधानी स्यालकोट (साकल) बनाई। उसने भारतीय राजाओं के समान उपाधि धारण की जैसे धर्ममीत, अजेय, रेक्स, इण्डोरम ग्रेट डेमेट्रियस आदि। अपने नाम के सिक्के भी चलाए जिन पर यूनानी तथा खरोष्ठी लिपियों का व्यवहार किया गया है।

अफगानिस्तान और भारत में उसके तथा उसके पिता के नाम पर अनेक नगरों का नाम करण हुआ इनमें से कुछ महत्वपूर्ण नगर है : डेमेट्रियस पोलिस (आरकोशिय), दत्तामित्र (सौवीर) तथा यूथी डेमिया (शाकल)।

डेमेट्रियस के पश्चात भारत में यवनों की दो शाखाओं के राज्य का उल्लेख मिलता है। पहला वंश यूथी डेमस तथा डेमेट्रियस का था तो दूसरा यूक्रोटाइड्स का

एपोलोडोटस : पेरिप्लस के आधार पर इसका राज्य गंधार, पंजाब तथा सिंध में था। इसी ग्रंथ के अनुसार इसके सिक्के मिणाण्डर के सिक्कों के साथ बेरीगाजा (भड़ौच के बाजारों) में चलते थे।

मिणाण्डर (मिलिन्द) :- समस्त हिन्द यूनानी शासकों में वह सबसे महान था।

महायान बौद्ध ग्रंथ मिलिन्दपन्हो में मिणाण्डर के जीवन तथा उसके कार्यकलापों का वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ में बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ उसका आत्मवाद पर दार्शनिक संलाप है।

लामा तारानाथ की पुस्तक 'भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास' तथा क्षेमेन्द्र की पुस्तक 'अवदान कल्पलता' में भी इस यवन शासक का उल्लेख है। विभिन्न स्रोतों में इसे साकिया

का संरक्षक कहा गया है।
मिलिन्द के सिक्के काबुल से मथुरा और बुंदेल खंड तक पाये गए हैं। इलाहाबाद के निकट रेह नामक स्थान से उसका एक अभिलेख प्राप्त हुआ है
मिलिन्दपण्हो के अनुसार मिणाण्डर का जन्म अलेक्जेंड्रिया से 200 योजना की दूरी पर स्थित कलसी नामक ग्राम में हुआ था भारत में उसकी राजधानी साकल (स्यालकोट) थी।
पेरिप्लस के अनुसार उसका संबंध शासन संभवतः भड़ौच तक था जहाँ पर उसके सिक्के चलते थे। प्लूटार्क उसकी न्याय प्रियता की प्रशंसा करता है।
मिलिन्दपण्हो से उसके बौद्ध धर्मानुयायी होने की पुष्टि होती है। इसके अतिरिक्त सिक्कों पर जो धर्म चक्र हाथी के चित्र तथा धार्मिक्स शब्द मिलते है।

Scanned with CamScanner

उसमें उसके बौद्ध धर्म का प्रति अनुराग दिखता है
मिणाण्डर का उत्तराधिकारी स्त्रैटो प्रथम था। जिसने
पूर्ण शासक बनने पर सोटर की उपाधि धारण
की। इसी काल में हिन्द यूनानी के दूसरे वंशीय
शासकों जैसे हेलियोक्लेज तथा एण्टियालकिडस
के आक्रमण का सामनो उसको करना पड़ा।
यूक्रेटाइडस वंश :- इस वंश का संस्थापक
यूक्रेटाइडस ही था। इसने तक्षशिला को अपनी
राजधानी बनाया। जस्टिन का मानना है कि
इसी ने भारत विजय की थी इसी ने डेमे
ट्रियस के यूनानी राज्य को हस्तगत कर लिया।
लगभग 159-158 ईसा पूर्व में उसका पुत्र
हेलियोक्लेज शासक बना।
माना जाता है कि उस समय शुंग शासक

भागवत (भागभद्र) तथा एण्टियाल्किडास ने दूसरे वंश के विरुद्ध शुंगो से गठबंधन किया था।

इस वंश का अंतिम शासक हर्मियस था।

इण्डोग्रीक शासको की वंशावली उनके सिक्को से ज्ञात होती है। उनके सिक्को के आधार पर बताया गया है कि कुल 30 इण्डोग्रीक शासको ने भारत पर शासन किया। उन्होने अपने सिक्को मे पहले यूनानी लिपि का प्रयोग किया फिर उन्होने खरो ष्ठी तथा ब्राह्मी लिपि का भी प्रयोग किया। हिन्द यूनानी शासन की महत्त्वपूर्ण देन उत्तरी पश्चिम भारत मे हेलेनिस्टिक कला का विकास है।

पूर्व मध्य काल मे लेखो मे सिक्के के लिये जो द्रम्म शब्द आया है। यह यूनानी भाषा से ही लिया गया है। ज्योतिष के क्षेत्र मे भी भारत

Scanned with CamScanner

ने यूनान से प्रेरणा ली। भारतीय ग्रंथों मे ज्योतिष के पाँच सिद्धान्त मिलते है।

1) पैतामह 2) वशिष्ट

3) सूर्य 4) पोलिश 5) रोमक

इनमें से अंतिम दो कि उत्पत्ति यवन संपर्क से हुई है। वराहमिहिर की कुण्डलिनी से संबंधित होरा ज्ञान पर यूनानी प्रभाव है।

मौर्योत्तर काल में भारत आने वाली विदेशी जातियों मे शको (शक) या सिथियन मूल रूप से मध्य एशिया के निवासी थे। 168 ईसापूर्व मे यूची नामक एक मध्य एशियाई जाति ने इन्हे इनके निवास स्थान सरयरिया नदी इलाके से खदेड़ दिया।

शक स्काइथियन के नाम से भी जाने जाते थे।